दिनांक 30 मार्च, 1984

सं को वि /एफ. ही. /25-84/13444. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । क्रिके । फ़िक जैकिंग इण्डस्ट्रीज प्रा० लि०, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री जय गोबिंद शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-% म/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री जय गोबिंद शर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं॰ भौ॰वि॰/एफ.डी./७०-84/13451. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि भै. पी. के. इण्डस्ट्रीज, 110 डी. एल. एफ. ऐरिया, फरीदाबाद के श्रमिक श्रीमित राज बती तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भामने में कोई भौदोगिक विवाद है :

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, प्रव, श्रीधोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना मं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ने हुए ग्रिधिसूचना मं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठिन श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उन्ते मुसंगत या उससे मंबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्विट करते हैं, जो कि उक्त प्रचन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:---

क्या श्रीमति राजवती की सेत्राओं का समापत क्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हक्कवार है ?

सं. ग्री.वि./ग्रम्बाला/41-84/13458. — चूंकि हरियाणा के राज्यताल की राज है ति कार्यकारी ग्रिमियन्ता ग्रीप्रेशन हरियाणा राज्य विजनी वोर्ड, शाहवाद मारकण्डा (कुरुक्षेत्र), के श्रमिक श्री राज कुमार तथा उसके प्रवन्यकों के मध्य इनमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विजाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रीवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीविस्चना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ गईते हुए अधिसूचना सं. 11495-श्री-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त अधिनियम की बारा 7 के प्रशीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादयस्त या उससे मुसगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अपया सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राज कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं धी.वि./जी.जी.एन./124-83/1346-1.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं कावली जी होंस्पीटल ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र धामडोज (गुड़गांवा), के श्रमिक श्रीमित जगवती देवी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंित हरिदाणा के राज्यपाल विवाद को न्यापनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौदोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई क्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7

٠,

के प्रश्रीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हे लिए निर्देश्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तया श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्रीमती जगवती देवी की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं ग्रो.वि./रोहतक/41-84/13-171.—-च्ंकि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि मै० बलजीत पैकरज प्रा० लि० मार्डेन इन्हर्स्ट्रीज, बहादुरगढ़, (रोहतक) के श्रमिक श्री जवाहर लाल तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीशोगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि राज्यपाल हरियाणा इस विवाद को त्यायितणंग हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय सममते हैं ;

इस लिये, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधिसृचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रीधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की घारा 7 के ग्रीधीन गठित श्रम न्यापालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय हेतू निर्दिय्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जवाहर लाल की सेवाभों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्री.वि./जी.जी.एन./112-83/13478.—चूंकि ह्रियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) नियंत्रक ह्रियाणा राज्य परिवहन चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर हरियाणा रोडबेज, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री विजय सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीबोगिक विवाद श्रीधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचता सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रीधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधसूचना की धारा 7 के ग्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणैय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुमंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री विजय सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./यमुना/355-83/13486---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज हरियाणा रोडवेज, यमुनानगर के श्रीमिक श्री श्रमर नाथ तथा उसके श्रवन्धकों के बीच इसनें इसके बाद लिखिन मानले में कोई मीधोगिक शिवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विदाद अधिनियम, 1947 की द्वारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिनतों का प्रयोग करते हुए हृत्यिणा के राज्यभाल इसके द्वारा तरकारा अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहले हुए अधिसूचना सं० 1145-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदायाद, को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिका के बीच या तो विवादगस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है: -

क्या श्री श्रमरनाथ को सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्व का हकदार है ?